

लाख की घरेलू उपयोगिता पर एक नजर

सुभाष अग्रवाल

घमतरी, छत्तीसगढ़

जैसा कि हम सभी को मालूम है कि हम भारतवासियों को लाख, बहुत प्राचीनकाल से प्रकृति द्वारा विरासत में मिली है, इसके प्रमाण हमारे ग्रंथ हैं। इससे मालूम पड़ता है कि लाख की खेती हजारों वर्षों पहले से होती आ रही है, किन्तु व्यवसाय में इसका उपयोग सन 1900 के बाद से बराबर बढ़ने लगा, सन 1900 तक 95 प्रतिशत लाख निर्यात हो जाता था और मात्र 5 प्रतिशत लाख की भारत में खपत होती थी। समय की उपयोगिता के साथ भारत में इसका उपयोग धीरे-धीरे बढ़ने लगा और वर्तमान में भारत के कुल लाख उत्पादन का 30 प्रतिशत लाख भारत में उपयोग हो रहा है तथा शेष 70 प्रतिशत लाख आज भी विदेशों को चला जाता है।

हम आपको यह बताना चाहते हैं कि लाख उद्योग से वर्तमान में हम क्या-क्या बना रहे हैं एवं लाख की उपयोगिता अभी किन-किन क्षेत्रों में हो रही है एवं इसे और कैसे बढ़ा सकते हैं।

लाख से लाख दाना एवं चपड़ा लाख तैयार होता है जिसका उपयोग पेंट, विर्निश, हैडी क्राफ्ट, काटेज इंडस्ट्रीज, ओरनामेंट, इलेक्ट्रीक वायर इन्सुलेसन इत्यादि में होता है। इनमें सबसे ज्यादा करीब 60 प्रतिशत उपयोग पेंट वार्निश में होता है। जो लाख दाना एवं चपड़ा के मूल्य में उतार चढ़ाव के कारण सिंथेटिक राल उपयोग करने लग जाते हैं जबकि लाख दाना एवं चपड़ा, सिंथेटिक राल की गुणवत्ता से बहुत अच्छा होता है, अतः लाख दाना चपड़ा के भावों में स्थिरता बहुत जरूरी है। ज्यादा उँचा भाव होना भी लाख के भविष्य के लिए अच्छा नहीं है। लाख के स्थिर भाव रहने से सिंथेटिक राल की उपयोगिता अपने आप डबल हो सकती है। लाख दाना एवं चपड़ा की उपयोगिता बढ़ाने के लिए हमें प्रचार प्रसार की भी आवश्यकता है तथा लाख से निर्मित हैन्डी क्राफ्ट उद्योग, ज्वेलरी उद्योग हमारे जहां कुटीर उद्योग के रूप में बहुतायत में भारतवर्ष के बहुत सारे जगहों में होता है। जिसमें मुख्य रूप से जयपुर, बलरामपुर, नवरंगपुर, इंदौर, हैदराबाद, मुज्जफरपुर, संबलपुर, विशाखापट्टनम जैसी जगह में परिवार सहित लोग हस्त शिल्प की वस्तुएं बनाकर अपना परिवार का गुजारा करते हैं, इन वस्तुओं की बड़े शहरों में तथा विदेशों में अच्छी डिमांड होने के बावजूद भी ये सप्लाई करने में सक्षम नहीं हैं, क्योंकि आर्थिक एवं मानसिक रूप से कमजोर है इस ओर शासन या लाख के विकास से जुड़ी संस्थाएँ अगर ध्यान दे तो इसकी खपत दुगुनी तिगुनी की जा सकती है।

लाख दाना एवं चपड़ा विद्युत कुचालक होने की वजह से विद्युत उद्योगों में चपड़े का उपयोग मुख्यतः बिजली निरोधक वार्निश, ढले हुए बिजली निरोधक सामान, इलैट्रीक वायर में इन्सुलेशन के रूप में किया जाता है । अपनी कुछ विशेषताओं के कारण चपड़ा लाख बिजली का सामान तैयार करने में बहुत उपयुक्त सिद्ध होता है,

- क्योंकि चपड़ा लाख में बिजली का निरोध करने की असाधारण क्षमता है ।
- दूसरी यह है कि इसकी वार्निश की परत बहुत अच्छी चढ़ती है ।
- तीसरा यह अधिकतर पदार्थों जिसमें अभ्रक भी सम्मिलित है के साथ यह आसानी से चिपक जाता है ।
- चौथा इसमें अवरोध शक्ति अधिक होती है ।
- पांचवा असंचार शीलता का गुण अर्थात् सतह को काली न पड़ने देना और नीरव अथवा अधिक वोल्टेज वाले विद्युत वेग की स्थिति में कन्डक्टिड टैकों का विस्तार । इसमें तीसरी एवं पांचवी विशेषता बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि चपड़े के अतिरिक्त अन्य प्राकृतिक रालों में यह विशेषतायें नहीं पाई जाती ।

चपड़े का प्रयोग बिजली निरोधक पतले कागज, बिजली निरोधक नलिकाएं, बैटरियों, नलियों एवं अभ्रक की फीते आदि के लिए किया जाता है । इसके अलावा विशेष प्रकार के ढले हुए अवरोधक जैसे स्विचों के हेन्डल, बोर्ड, पिन्ड, डायल, स्पार्क, शील्ड, बिजली के स्वीच आदि तैयार करने के लिए किया जाता है । लाख दाना एवं चपड़ा का उपयोग पालिश के क्षेत्र में, चमड़े के सामानों में पालिश सजावट अथवा हिफाजत के लिए विविध प्रकार की वार्निश, पालिशों तथा सुनहरी वार्निशों के रूप में तथा फर्नीचर तथा अन्य वस्तुओं पर जैसे वाद्ययंत्रों, खेल के सामान, खिलौने, लैम्प स्टैंड, लकड़ी तथा धातु में पड़ी दरारों में भरने के लिए भी किया जाता है । फर्श पालिश, कागज पर लेप, मैल आदि से बचाने के लिए धातु के बर्तनों पर लेप, पुरातत्व और प्राणी शास्त्र विषयक नमूनों की रक्षा हेतु लेप, तास के पत्तों मोम जामे, आयल क्लाथ, आयल सिल्क, लाइनोलियम आदि की सतह चिकनी करने के उद्देश्य से इसका उपयोग होता है । मोहर लगाने में भी लाख का प्रयोग बहुत प्रचीनतम है । अच्छी किस्म की मोहर लगाने में लाख चपड़े का उपयोग उचित एवं अच्छा माना जाता है, दूसरे राल को अभी तक इस ओर सफलता नहीं मिली है । इसके अलावा केकर, इंडस्ट्रीज विस्फोटक पदार्थ, बम वगैरह बनाने के काम भी आता है ।

डीवैक्स ब्लिज लेक एवं डीवैक्सड डीक्जराइज्ड शैलेक का उपयोग कलर लेस वार्निश, फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्रीज चाकलेट एवं फ्रूट कोटिंग तथा बेस्ट क्वालिटी की पेंट एवं वार्निश में किया जाता है । वर्तमान में इसकी उपयोगिता भारत में बढ़ रही है तथा और प्रयास करने की आवश्यकता है । डेंटल प्लेट, फर्श पर बिछाने की चटाईयां, टाईल्स, टायर, ट्यूब और मोम जामे आदि तैयार करने के लिए भी किया जाता है ।

रबड़ इंडस्ट्रीज में इसका प्रयोग करने से रबड़ को कड़ा करना तथा विभिन्न रूप देने में सुगमता हो जाती है, रबड़ का झिझिरापन कम हो जाता है और तैयार माल की आयु तथा उसकी तेल और बिजली निरोधक क्षमता में वृद्धि हो जाती है ।

फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्रीज में इसका उपयोग दवाईयों में एवं कैप्सूल में, बाहरी गर्मी एवं नमी से बचाने के लिए किया जाता है, जिससे दवाईया खराब नहीं होती तथा इसकी लाइफ बढ़ जाती है इसके अलावा आयुर्वेद की दवाईयां भी बनाने में उसका उपयोग किया जाता है ।

इसका उपयोग चाकलेट एवं फ्रूट कोटिंग जिसमें मुख्यतः सेव एवं नासपाती में भी इसकी कोटिंग की जाती है जिससे फल जल्दी खराब नहीं होते एवं इसकी कोटिंग की वजह से सुंदर एवं चमकदार दिखते है । फ्रूट कोटिंग में इसकी खपत और बढ़ाई जा सकती है जिससे यहां के फल बाहर जाकर ज्यादा दिन रह सकते है और मार्केटिंग में सहूलियत हो सकती है । अच्छी क्वालिटी की पेंट एवं वार्निश में भी इसका उपयोग होता है ।

एल्यूरिटिक एसीड का उपयोग भारतवर्ष में परफ्यूमरी इंडस्ट्रीज एवं कास्मेटिक इंडस्ट्रीज एवं फाइन केमिकल इंडस्ट्रीज एवं फार्मास्यूटिकल इंडस्ट्रीज में किया जाता है । भारतवर्ष में इसका उपयोग बहुत कम है, एल्यूरिटिक एसीड जो भी भारत में तैयार होता है 90 प्रतिशत माल विदेशों में चला जाता है । 10 प्रतिशत खपत भारत में होता है, अतः इसकी उपयोगिता भारत में बढ़ाना जरूरी है, जिससे विदेशों के उपर आश्रित न होना पड़े ।

आइसोएब्रोतोलाइड का उपयोग भारत में परफ्यूमरी इंडस्ट्री में किया जाता है, अतः इसके प्रचार प्रसार की आवश्यकता है, जिससे इसका प्रसंस्करण किया जा सके और लाख की खपत बढ़ाई जा सके ।

लाख के प्रसंस्करण से हमें कुछ बाइ प्रोडक्ट भी मिलती है जिसका मैं बहुत ही संक्षिप्त में जानकारी देना चाहूंगा - इसका उपयोग एवं खपत भारतवर्ष में आसानी से हो जाता है । पहला है - कुनी एवं नाली मुलम्मा - इसका उपयोग आटोमोबाईल इंडस्ट्री एवं गेस्केट शोलेक में होता है । दूसरा हमें -रंग पसेवा एवं किरि मिलता है जिसका ब्लेक टी.एन. बनाकर गेस्केट शोलेक एवं आटोमोबाईल इंडस्ट्री में खपत हो जाता है तीसरा हमें डी वेक्स लेक बनाते समय लाख में मौजूद 0.05 प्रतिशत मोम की प्राप्ति होती है जो लेदर पालिश एवं फ्लोर पालिश बनाने में उपयोग आता है ।

लाख की धुलाई करने में जो पानी निकलता है उससे लेक डाइ बनाते है इसका उपयोग प्रचीनकाल में व्यापक रूप से किया जाता था । उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में विदेशों में इन्द्रगोप के विकल्प के रूप में लाख के रंग का उपयोग किया जाता था, एनीलीन रंगों का आविष्कार हो जाने पर लाख के रंग का प्रयोग बंद हो गया, भारत में रेशम, ऊन और चमड़ा रंगने के लिए लाख के रंग का उपयोग बहुत अधिक किया जाता था किन्तु अब अधिक सस्ते और अनेक प्रकार के रंग उपलब्ध होने के कारण यह प्रसंस्करण मृत प्रायः हो

गया है, इस प्रसंस्करण में मजदूरी एवं खर्च ज्यादा आ रहा है, अतः इसको बनाने में खर्चीलापन को कैसे कम किया जा सकता है । इस पर ध्यान देना होगा । तभी प्रसंस्करण पुनः चालू हो सकती है ।

अभी तक हमने जितने प्रसंस्करण बताये हैं एवं उनसे प्राप्त चीजों की खपत बताएं हैं, उसमें हमने देखा कि सबसे ज्यादा खपत फर्नीचर पालिश में होता है, इसे अगर हम कई गुना ज्यादा बढ़ाना चाहते हैं तो हमें पुरानी पद्धति से पालिश करने की कला को बदलना होगी, पुरानी पद्धति से मेरा तात्पर्य लकड़ी को बार बार रेतमल कागज से घिसना फिर पालिश करना, फिर घिसना फिर कपड़े से पालिश करना, इसमें मेहनत, समय, मजदूरी बहुत ज्यादा लगती है और पालिश कम होता है । अतरू हमें समय के साथ साथ बदलना होगा एवं नई टेक्नोलॉजी लाना होगा । जिसमें गन स्प्रे, पेटिंग हो सके। जिससे मेहनत, समय, मजदूरी की बचत हो सके तथा सरफेस में चिकनाई एवं चमक भी ज्यादा आवे । यह टेक्नॉलाजी सिर्फ भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान के वैज्ञानिकों के प्रयास से ही संभव हो सकती है, मैं आशा करता हूँ कि संस्थान जरूर प्रयास करेगी जिससे सेंथेटिक रेजीन की खपत घटने से हमारे यहां के लाख की खपत कई गुना बढ़ जावेगी ।

आज प्रचार प्रसार का जमाना है । जिसके अभाव में इतनी गुणवत्ता लिये लाख जो डिवेक्स करने पर खाने में नुकसानदायक नहीं है । इसके विपरित भारत में सिंथेटिक रेजीन, चाकलेट, दवाईयों एवं फ्लूट कोटिंग में काम आ रहा है, जो हमें काफी नुकसान पहुंचाता है, अतरू मैं संस्थान से अनुरोध करूंगा कि लाख का प्रचार प्रसार भी करें जो क्षेत्रीय स्तर पर ना होकर राष्ट्रीय स्तर पर हो ।

अन्त में मैं भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान द्वारा अथक एवं समर्पित प्रयासों के कारण उक्त सभी प्रसंस्करण की उपलब्धियां संभव हो सकी है । अतरू सभी प्रसंस्करण के मार्गदर्शन के लिये आभार व्यक्त करता हूँ तथा संस्थान के सभी वैज्ञानिक द्वारा किये गये बहुमूल्य योगदान तथा सहयोग की हार्दिक प्रशंसा करता हूँ । मैं छत्तीसगढ़ में लगातार विकास एवं विस्तार के लिये विशेष कर आदरणीय डा. अजय भट्टाचार्य जी, डा. जायसवाल जी एवं इनकी टीम को बहुत-बहुत घन्यवाद देना चाहता हूँ, तथा मुझे विश्वास है कि आपके इसी लगन की कार्य क्षमता से छत्तीसगढ़ एवं पूरे भारत के लाख उद्योग का विकास आने वाले समय में कई गुना ज्यादा बढ़ेगा, ऐसी कामना करते हुए अपने शब्दों को यही विराम देता हूँ ।